मासिक ई-समाचार पत्रिका

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर, बिहार- 848125

कुलपति महोदय का संदेश

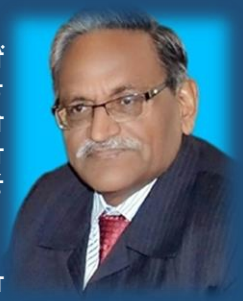

भारत में संगठित कृषि एवं अनुसंधान की जन्मस्थली डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा के शैक्षणिक सत्र में नए प्रवेशित छात्रों को मैं बधाई देता हूँ साथ हीं विश्वविद्यालय में नव-नियुक्त प्राध्यापकों का स्वागत करता हूँ । मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई है कि विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के कुल 53 छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न परीक्षाओं को उत्तीर्ण किया है | विश्विद्यालय ने कोविड-19 महामारी के बाद अपने शोध कार्य हेतु वापस आने वाले छात्रों के लिए छात्रावास में स्वच्छतापूर्वक रहने की व्यवस्था उपलब्ध कराया है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण छात्रों के समग्र विकास को सुनिश्चित करेगा और उन्हें भारत का एक अच्छा नागरिक बनाएगा।

मुझे यह जानकार भी ख़ुशी हुई है कि एक बड़े क्षेत्र में रबी की फसल बोई गई है और उम्मीद है कि इस बार भी अच्छी पैदावार होगी। मुझे यकीन है कि किसान अपने बीज / रोपण सामग्री को बदलने / सुधारने में अच्छी पैदावार से लाभ उठाएंगे तथा इससे उनकी कृषि आय में वृद्धि होगी। यह विश्वविद्यालय किसानों को कृषि संसाधनों के बेहतर प्रबंधन और निरंतर विकास के लिए हर कदम पर शिक्षित और मार्गदर्शन करने के लिए तैयार है। अंत में मैं अपने छात्रों, वैज्ञानिकों, कर्मचारियों और विश्वविद्यालय परिसर में रहने वाले सभी लोगों के सुरक्षित एवं सुखमय जीवन की कामना करता हूं |

कुलपति महोदय की संलग्नता

खंड - 1, अंक - 6
दिसंबर, 2020

संरक्षक :
डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
(माननीय कुलपति)

संकलन एवं संपादन:
डॉ. (राकेश मणि शर्मा
रत्नेश. कु. झा
पी. कु. प्रणव
अंकुर जमवाल
आशीष कु. पंडा
गुप्तनाथ त्रिवेदी
कु. राज्यवर्द्धन)

तकनीकी सहायता : मनीष कुमार

प्रकाशन प्रभाग,
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय
कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
www.rpcau.ac.in
publicationdivision@rpcau.ac.in

- दिनांक 10.11.2020 को कॉन्फ्रेंस हॉल, रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा में रबी फसलों के लिए राज्य कार्यशाला की हुई बैठक की अध्यक्षता की।
- दिनांक 10.11.2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भारतीय कृषि विश्वविद्यालय संघ की कार्यकारी समिति की बैठक में महासचिव की हैसियत से भाग लिया।
- दिनांक 11.11.2020 को "कृतज्ञ" (KRITAGYA) - एक राष्ट्रीय स्तर की एगटेक हैकाथॉन में “पूर्वी क्षेत्र में फार्म मशीनीकरण में नवाचार” को बढ़ावा देने हेतु विषय पर आयोजित की गई बैठक की अध्यक्षता की |
- दिनांक 12.11.2020 को माली प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह की अध्यक्षता की।
- दिनांक16.11.2020 को जिलाधिकारी समस्तीपुर की उपस्थिति में बूढी गंडक नदी के किनारे ढाब क्षेत्र में बने "रिवर फ्रंट कैफे" पूसा का उद्घाटन किया।
- दिनांक 17.11.2020 को संचार केंद्र भवन में "पंचतंत्र सभागार कक्ष" का उद्घाटन किया।
- दिनांक 24-11-2020 को "बागवानी फसलों की जड़ सड़न रोग का प्रबंधन” विषय पर आयोजित राष्ट्रीय वेबिनार का उद्घाटन किया।
- दिनांक 26.11.2020 को भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली द्वारा आयोजित “संविधान दिवस समारोह” में भाग लिया।
- दिनांक 26.11.2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से "भारतीय कृषि अभियंता सोसाइटी” (इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियर्स)-बिहार अध्याय" का शुभारंभ किया।
- दिनांक 27-11-2020 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली के क्षेत्रीय समिति संख्या IV की बैठक में भाग लिया।
- दिनांक 28.11.2020 को कृषि शिक्षा योजना के तृतीय पक्ष से मूल्यांकन के लिए रा.प्र.के.कृ.वि. के कुलपति और वैधानिक अधिकारियों की बैठक में भाग लिया |

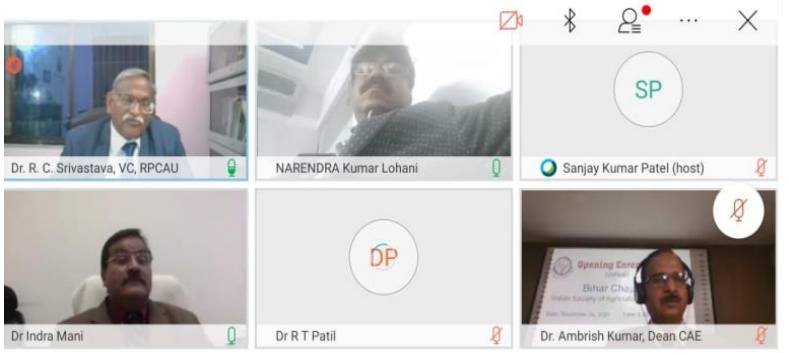

शिक्षा और शैक्षिक गतिविधियाँ:

- रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा के विभिन्न विभाग के 53 छात्रों ने अलग-अलग राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न परीक्षाओं (34 एस.आर.एफ.,15 जे.आर.एफ., 04 यूजीसी / सी.एस.आई.आर / और डीबीटी नेट योग्यता) को उत्तीर्ण कर विश्वविद्यालय की गरिमा को बढ़ाया।
- भा.कृ.अनु.प.के पहले दौर के विभिन्न स्नातकोत्तर और पी.एच.डी. प्रवेश कार्यक्रम नवंबर 2020 में सफलतापूर्वक आयोजित किये गए। अगले दौर की काउंसलिंग अभी जारी है।
- भा.कृ.अनु.प. (एनटीए) के परीक्षा के माध्यम से तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली के तीन जे.आर.एफ. के छात्रों सहित उन्नीस स्नातक छात्रों ने पूरे देश के विभिन्न कृषि विश्विद्यालयों के परास्नातक कार्यक्रम में दाखिला लिया।
- माननीय कुलपति डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव, कुलसचिव, डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव एवं सभी अधिष्ठाता एवं निदेशकों के गरिमामयी उपस्थिति में 5 नवंबर, 2020 को मत्स्यकी महाविद्यालय ,ढोली का 34वां स्थापना दिवस मनाया गया। माननीय कुलपति जी ने मत्स्य पालन के दो प्रख्यात विद्वानों डॉ.पी.वी. देहराई और डॉ. वी. जी. झिंगरानदो के नाम पर नवनिर्मित सम्मेलन कक्ष का उद्घाटन किया। उन्होंने 40 छात्रों के लिए स्मार्ट पोडियम सुविधा के साथ एक पीजी स्मार्ट क्लास रूम का भी उद्घाटन किया। इस अवसर पर डॉ. पी. पी.श्रीवास्तव, कुलसचिव, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा ने अपने सम्बोधन में बिहार में चावल और सब्जियों के साथ एकीकृत मछली पालन के क्षेत्र पर विशेष रूप से प्रकाश डाला।

- विभिन्न राज्यों के विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रो में 2 नवंबर से 30 दिसंबर तक मत्स्यकी महाविद्यालय ,ढोली के 7वें सेमेस्टर के छात्रों का ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम में (RAWE) प्रशिक्षण चल रहा है।.

- माननीय कुलपति डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव जी की अध्यक्षता में 26 नवंबर 2020 को कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा में वर्चुअल प्लेटफार्म के माध्यम से भारतीय कृषि अभियंता सोसाइटी "इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियर्स (ISAE)" के बिहार अध्याय का उद्घाटन किया गया एवं भारतीय कृषि अभियंता सोसाइटी "इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियर्स (ISAE) की कार्यकारी समिति के सदस्यों द्वारा विचार साझा किया गया। कुलपति महोदय ने विश्वास प्रकट किया कि बिहार अध्याय से उत्तर-पूर्व के राज्यों में विशेष रूप से कृषि अभियंत्रण,खेत में मशीनीकरण, बाढ़ नियंत्रण के उपाय, खाद्य प्रसंस्करण और विपणन क्षेत्र इत्यादि से संबंधित सरकारी नीतियों के निर्धारण में निश्चित रूप से सुविधा होगी। भारतीय कृषि अभियंता सोसाइटी "इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियर्स (ISAE) के कार्यकारी परिषद के संरक्षक डॉ. गजेंद्र सिंह, कार्यकारी परिषद के अध्यक्ष, डॉ. इंद्र मणि, महासचिव, डॉ. मनोज खन्ना, डॉ. सईद, डॉ. आर.टी. पाटिल एवं कार्यकारी परिषद के सभी सदस्यों के साथ नरेंद्र लोहानी, माननीय कृषि मंत्री के विशेष कार्य अधिकारी, बिहार सरकार, अभियंता जे.पी. नारायण, संयुक्त निदेशक और नोडल अधिकारी, बिहार सरकार भी इस ऐतिहासिक दिन पर उपस्थित थे।

अनुसन्धान:

तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली में फसल कैफेटेरिया

तिरहुत कृषि महाविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग ने एक नई पहल के तहत फसल कैफेटेरिया स्थापित किया है। इस में गेहूं, जौ, राई, मक्का, अलसी, राजमा, सरसो, सूर्यमुखी, मटर, मसूर, चने और मसालों की कुल 19 किस्मो की बुवाई की गई है। कैफेटेरिया, छात्रों तथा किसानो के साथ-साथ फील्ड स्तर के प्रसार कार्यकर्ताओं के प्रदर्शन के लिए बहुत उपयोगी है।

माली प्रशिक्षण कार्यक्रम

एन.एच.एम. की ओर से प्रायोजित छः महीने के माली प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह 12 नवंबर 2020 को बागवानी विभाग, कृषि परास्नातक महाविद्यालय, पूसा द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अन्य प्रमुख अधिकारी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान योग्य प्रशिक्षुओं को गार्डन टूल किट, प्रशिक्षण मैनुअल और कोर्स पूरा करने का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

- **डी. बी. टी. प्रायोजित बायोटेक किसान हब परियोजना**

डी. बी. टी. प्रायोजित बायोटेक किसान हब परियोजना के तहत डॉ.रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा की ओर से सीमांत किसानो के सशक्तिकरण के लक्ष्य को ध्यान में रखकर सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, और बेगूसराय में परियोजना की शुरुआत की गई है। इस कार्यक्रम के तहत प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र में उच्च मूल्य बागवानी फसलों के लिए तीन प्रदर्शन इकाई की स्थापना की गई है। अधिक मूल्य वाली सब्जियों जैसे शिमला मिर्च, ब्रोकली, फ्रेंच बीन, फूलगोभी, गार्डन मटर, टमाटर,मिर्च और लम्बी लौकी के बीज और रोपण सामग्री तथा मेथी, धनिया और निगेला और केला फल के पौधे भी वितरित किये गए है।

- **इंटरनेशनल सेंटर फॉर एग्रीकल्चरल रिसर्च इन द ड्राई एरियाज (ICARDA) आयोजित कार्यक्रम**

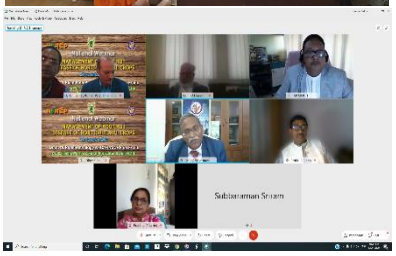

शुष्क क्षेत्रों में कृषि अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम के तहत बिहार के 50 किसानो को L 4717 (पूसा अगेती) और L 4727 IARF नामक जैव फोर्टिफाइड मसूर की दो किस्मो के बीज वितरित किये गए।

- **बागवानी फसलों के जड़ सड़न रोग प्रबंधन पर वेबिनार**

पादप- रोग विज्ञान विभाग, कृषि परास्नातक महाविद्यालय, पूसा की ओर से फलों और राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षिक परियोजना (NAHEP) पर 24 नवंबर 2020 को एक अंतर्राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। इस वेबिनार का उद्घाटन माननीय कुलपति डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव ने किया। वेबिनार में प्रसिद्ध वक्ताओं ने दर्शको के साथ अपनी विशेषज्ञता साझा की। वेबिनार में देश एवं विदेश के एक हजार से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

- **'फसल उत्पादकता पर जल के तनाव के प्रभाव : शमन और अनुकूलन तकनीकें' विषय पर वेबिनार**

राष्ट्रीय कृषि उच्च शैक्षिक परियोजना (NAHEP) के सहयोग से जल प्रबंधन पर उत्कृष्टता केंद्र, की ओर से जल प्रबंधन पर दिनांक 24 से 26 नवंबर 2020 के दौरान एक वेबिनार का आयोजन किया। वेबिनार का उद्घाटन माननीय कुलपति डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव जी ने किया। वेबिनार में राज्य और देश के विभिन्न विशेषज्ञों ने फसल उत्पादकता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पर अपनी राय रखी तथा अपने अनुभव साझा किये। वक्ताओं ने मानसून के बदलते स्वरुप, जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी एवं अन्य परिवर्तनों के वर्तमान परीदृश्य पर चर्चा की तथा भविष्य में इससे आने वाली वैश्विक चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किये। इस वेबिनार में देश विदेश के 200 से ज़्यादा प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कषि प्रसार गतिविधियाँ:

- **जीरो टिलेज बीज उत्पादन कार्यक्रम**:

जलवायु परिवर्तन आधारित कृषि कार्यक्रम के तहत जीरो टिलेज बीज उत्पादन के अंतर्गत विभिन्न गाँवों बिशुनपुरा, सिपाया, खेमतिहिन्या, तिवारीमतिहिन्या और बरईपट्टी में गेहूं की लाइन बुवाई (वार। एच.डी. 2967) की गई। किसानों के प्रदर्शन के लिए, बीज उत्पादन कार्यक्रम के तहत किसानों के खेत में गेहूं की हैप्पी सीडिंग की गई।

दैनिक भास्कर गोपालगंज 06-11-2020

मशरुम की खेती का पांच दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

सिटी रिपोर्टर| सासामुसा

कृषि विज्ञान केंद्र सिपाया में मशरूम की खेती की पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। कार्यक्रम की शुरुआत केंद्र के वरीय वैज्ञानिक सह निदेशक डॉ रामकृष्ण राय ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रशिक्षण शिविर में बोलते हुए डॉक्टर राय ने कहा कि किसानों की आय को बढ़ाने के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है। इसी कड़ी में सरकार के द्वारा मशरूम की खेती का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस मौके पर कोर्स प्रशिक्षक, डॉ संजय कुमार के द्वारा किसानों को मशरूम की खेती की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षक शंकाओं का समाधान भी उनके द्वारा किया गया। मौके पर इंजीनियर नवीन कुमार, डॉ अमित बिसेन ,डॉ अनिता गौतम, डॉ साजिद हुसैन, प्रक्षेत्र प्रबंधक रवि कुमार, चिंटू कुमार, पप्पू कुमार उपस्थित रहे।

- **मशरूम प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन**

कृषि विज्ञान केंद्र., सिपाया और कर्णपुरा गाँवों में मशरूम उत्पादन एवं बकरी उत्पादन पर पांच दिनों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया और किसानो को उनकी कृषि आय बढ़ाने के लिए उक्त क्षेत्रों में प्रशिक्षित किया गया।

- **एस्कॉर्ट्स द्वारा शुरू की गई फार्म मशीन बैंक कार्यक्रम में भागीदारी**

4 नवंबर, 2020 को एस्कॉर्ट्स, फार्म ट्रैक्टर, फरीदाबाद, हरियाणा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में डॉ.अंबरीश कुमार, अधिष्टाता कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय , रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा ने भाग लिया और बिहार में फार्म मैकेनाइजेशन की चुनौतियों और अवसरों पर बात की। इस अवसर पर उन्होंने "लाभ" कृषि यांत्रिकरण में लागू बैंक " पर संवाद किया । उन्होंने बिहार के 12 जिलों में काम कर रहे कस्टम हायरिंग सेंटर के रूप में इम्प्लीमेंट्स बैंक के बारे में जानकारी दी, जिसमें प्रत्येक केंद्र पर किसानों को अग्रिम मशीनों / सुपर बीजक, फसल काटने एवं बांधने की मशीन, आलू खोदने, आलू बोने की मशीन, लेज़र लाइनर आदि की सुविधा प्रदान की गई है । उन्होंने इस पहल के लिए एस्कॉर्ट्स समूह को धन्यवाद दिया और सुझाव दिया कि कृषि मशीनरी में अन्य कॉर्पोरेट सेक्टर और किसानों को ऐसी सहयोगी पहल सेवाओं का लाभ उठाना चाहिए।

- कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी ने अपने फार्म इम्प्लीमेंट बैंक से किराए के आधार पर क्षेत्र के ग्राम बरहरवा कोठी के किसानों को गेहूं की बुवाई से पहले खेतों में जीरो टिलेज तकनीक के साथ शाकनाशी का छिड़काव करने हेतु बूम स्प्रेयर प्रदान किया।

- माननीय कुलपति महोदय ने प्रसार से संबंधित विभिन्न गतिविधियों और प्रशिक्षणों के लिए रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा के संचार केंद्र में पुनर्निर्मित व्याख्यान कक्ष जिसे "पंचतंत्र सभागर" के नाम से जाना जायेगा का उद्घाटन किया।
- 25 नवंबर 2020 को माननीय कुलपति और रा.प्र.के.कृ.वि.,पूसा के वरिष्ठ अधिकारियों ने केंद्र में किए जा रहे विभिन्न प्रसार गतिविधियों के अवलोकन के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, परसौनी, पूर्वी चंपारण का दौरा किया। पोली हाउस नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों में उच्च मूल्य वाली सब्जियों की खेती और उत्पादन पर सुचना प्राप्त करने के लिए केंद्र के आस-पास के गांवों के किसान बंधु भी कृषि विज्ञान केंद्र, परसौनी पहुंचे थे।

- **क्लाइमेट रेजिलिएंट एग्रीकल्चर(CRA) कार्यक्रम के तहत कृषि विज्ञान केंद्र, सुखेत में फसल अवशेष और घरेलू कचरा प्रबंधन की शुरुआत**

घरेलू पशुओं के गोबर, मल-मूत्र और घरेलू अपशिष्ट ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में उनके स्वच्छता और स्वास्थ्य के लिए एक कड़ी चुनौती उपस्थित करता है। इसके अलावा धान की खेती उपरांत समय से दूसरी फसल बोने के लिए किसानों द्वारा जलायें जाने वाले चावल के ठूंठ जैसे फसल अवशेष जलवायु परिवर्तन के लिए एक और कारण एवं चुनौती पेश करते है। इन चुनौतियों के समाधान के लिए, कृषि विज्ञान केंद्र, सुखेत में एक फसल अवशेष प्रबंधन इकाई स्थापित की गई है, जहां सभी घरों के अवशेष, गोबर और अन्य कृषि फसल अवशेष एकत्र किए जाएंगे और कृमि खाद (वर्मीकम्पोस्ट) में परिवर्तित किए जाएंगे।

- **सुनिश्चित सिंचाई में वृद्धि हेतु चावल-गेहूं की फसल प्रणाली में जलवायु अनुकूलता**

चावल-गेहूं की फसल प्रणाली पूरे उत्तरी मैदानों में सबसे लोकप्रिय फसल प्रणाली है। लेकिन अप्रत्याशित मानसून के कारण यह प्रणाली बहुत नाजुक हो गई है और रबी के मौसम के दौरान गेहूं की देर से बुवाई का कारण बनती है जिससे गेहूँ अपने फूल और दुग्धावस्था के दौरान गर्म हवाओं से प्रभावित हो जाता है। इस तरह गेहूं और चावल दोनों की फसल अप्रत्याशित मानसून तथा टर्मिनल गर्मी के कारण प्रभावित होती है। इन समस्याओं को हल करने के लिए एक 3 एच.पी. एकल चरण ट्यूवेल सामुदायिक सिंचाई प्रणाली के तहत स्थापित किया गया है जो चावल की फसल को सुनिश्चित सिंचाई प्रदान करता है ताकि किसान 30 अक्टूबर तक फसल का प्रत्यारोपण / बुवाई कर सकें और फसल काट सकें, जिससे गेहूं की समय पर बुवाई के लिए खेत खाली हो सके। इस तकनीक का प्रदर्शन रा.प्र.के.कृ.वि.,पूसा के 17 कृषि विज्ञान केन्द्रो के द्वारा अपनाएं गए गांवों के किसानो के 255 एकड़ क्षेत्रों/भूमि

खेल एवं अन्य पुरस्कार:

- रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा ने 26 नवंबर को भारत के संविधान दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर रा.प्र.के.कृ.वि. पूसा के छात्रों और कर्मचारियों द्वारा भारतीय संविधान के प्रस्तावना का पुनर्वर्णन किया गया। 26 नवंबर 1949 के दिन ही संविधान सभा ने भारत के संविधान को अपनाया था तथा यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ था।

- विश्वविद्यालय पुस्तकालय रा.प्र.के.कृ.वि.,पूसा को भा.कृ.अनु.प. और इन्फार्मेटिक्स इंडिया द्वारा इस वर्ष के प्रतिष्ठित पुरस्कार "बेस्ट प्रोफाइल रजिस्ट्रेशन अवार्ड ऑफ जे-गेट सेरा (*J-Gate @CeRA*) इन द इस्टर्न रीजन" से सम्मानित किया गया है।

- 21 नवंबर 2020 को मनाए जाने वाले विश्व मत्स्य दिवस के अवसर पर, द न्यूटिया यूनिवर्सिटी, साउथ 24-परगना, पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित “मत्स्य क्षेत्र में हाल के प्रगति” नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी में डॉ. तनुश्री घोराई, सहायक प्रध्यापक , मत्स्यकी महाविद्यालय , ढोली ने आमंत्रित व्याख्यान दिया।
- 2 से 20 नवंबर, 2020 के दौरान ऑल इंडिया एग्रीकल्चरल स्टूडेंट एसोसिएशन (AIASA) द्वारा आयोजित 69वां आई.आई.आर.एस. (IIRS) आउटरीच कार्यक्रम में, जी.आई.एस.(GIS) एप्लीकेशन में डॉ. एच. ऐस. मोगलेकर, सहायक प्रध्यापक, मत्स्यकी महाविद्यालय ने भाग लिया एवं ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता -2020 में प्रशंसनीय प्रमाण पत्र हासिल किया।